'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ७४ | वाराणसी, मंगलवार, २३ जून, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

ऊधमपुर (कश्मीर) २-६-'५९

तीन आवश्यक कर्तव्य : भेद मिटाओ, बाँटकर खाओ, शान्ति-सैनिक बनो

दीपक आते ही अंधेरा भागता है

लोग पूछते हैं कि यहाँ हजारों बरसों से हरिजन-परिजन भेद चला आ रहा है, वह कैसे मिटेगा ? लेकिन किसी खाई में दस हजार साल से अंधेरा भरा है और हम लालटेन लेकर वहाँ जाते हैं तो अंधेरा एक क्षण में खत्म हो जाता है। वह दस हजार साल का पुराना हो तो भी दीपक ले जाते ही फौरन दूर हो जाता है। वैसे ही अज्ञान और बुरे रीति-रिवाज हजार साल से चले आ रहे हों तो भी ज्ञान सामने आते ही वे टिक नहीं सकते। इसलिए इस प्रकार का भेद टिक ही नहीं सकता। हम सब परमेश्वर की सन्तान हैं। हमें मिल-जुलकर काम करना है, यही भावना लोगों में आनी चाहिए।

तीन महत्त्व के कर्तव्य

आज हमें तीन काम अवश्य करने चाहिए। १. 'नानक उत्तम नीच न कोई।' कोई ऊँच नहीं, कोई नीच नहीं। अतः हम ऊँच-नीच भेद को मिटायें, इस भेदासुर को खत्म करें। २. भगवान की जो देने हैं, उन्हें अकेले नहीं, सबको बाँटकर खायें। पानी सिर्फ मेरे लिए नहीं, सभी प्यासों के लिए है। चाहे मेरे बाप ने ही कुँआ क्यों न बनवाया हो, मैं यह नहीं कह सकता कि वहाँ से दूसरों को पानी नहीं लेने दूँगा। हर प्यासे का पानी पर हक है। हवा सबकी, पानी सबका, जमीन सबकी, इस मंत्र को जबानी कर लें और तदनुसार अपनी जमीन का हिस्सा भूमिहीनों को भी दें।

घर की सेवा तो सभी करते हैं। लेकिन गाँव की सेवा के लिए हम तैयार रहें। गाँव में कोई बीमार हो तो हम उसकी सेवा करें। कहीं गंदगी हो तो साफ करें और कहीं झगड़ा हुआ हो तो लोग में पड़कर शांति-स्थापना की कोशिश करें। ऐसा कहनेवाले बीच सामने आयें।

पुरुष लोग अपना दिमाग खो बैठे हैं, इसलिए कभी-कभी झगड़ा करते हैं। अतः बहनों को घर में छिपकर नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन्हें बाहर आकर लड़नेवालों के बीच खड़े होकर हिम्मत के साथ कहना चाहिए कि 'खबरदार, चुप रहो। आप लड़ना बंद नहीं करोगे तो हम बीच में पड़कर मार खायेंगी।'

सत्कार्य करने में डर किसका ?

जो भगवान का नाम लेकर अच्छा काम करने के लिए जायेगा, उसे किस बात का डर है ? उसमें क्या होगा, ज्यादा-से-ज्यादा यही होगा कि सिर फूटेगा। दुनिया में कौन नहीं मरता ? अच्छे काम के लिए मरना अच्छा ही है। रावण सीता को ले जा रहा था, वह बड़ा बहादुर था, उसके दस मुख और शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित बीस हाथ थे। लेकिन जटायु जैसा गीध पक्षी, जो कमजोर था, उसके बीच में आया। रावण के सामने उसकी क्या ताकत थी ? लेकिन उसने सोचा कि इस नराधम को मारना चाहिए, चाहे इसमें मेरा शरीर ही क्यों न गिर जाय। इस शरीर की क्या हस्ती है ? यह सोचकर वह रावण पर टूट पड़ा। फिर रामजी आये तो जटायु मरने की तैयारी में था। रामजी ने उससे कहा कि तुम मेरे पिता के समान हो। जटायु ने कहा कि सीताजी को छुड़ाने की कोशिश में मैं मर रहा हूँ तो मेरा जीवन सार्थक हुआ, मैं बेहद खुश हूँ। फिर रामजी ने उसके मस्तक पर हाथ रखा। तब वह रामजी का नाम लेकर मर गया। रामजी ने पिता के समान उसका श्राद्ध किया।

जटायु की तरह ही शान्ति-सेना की बहनें हिम्मत के साथ आगे बढ़ेंगी। वे सोचेंगी कि सामनेवाले के पास डंडा या पिस्तौल है तो हमारे पास रामजी का नाम है। वे लड़नेवालों के बीच पड़ेंगी। उसमें मरने की नौबत आयी तो यही समझेंगी कि हमें मुक्ति मिल गयी।

घर-घर सर्वोदय-पात्र हो

इन तीन कामों के साथ आपको और एक काम करना चाहिए। घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखना चाहिए और उसमें जो अनाज इकट्ठा हो, वह सर्वोदय-मंडल के पास पहुँचाकर उससे कहना चाहिए कि सर्वोदय के काम के लिए इसका उपयोग कीजिये।

[गतांक से समाप्त]

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

जम्मू (कश्मीर) १०-६'-५९

कश्मीर सुन्दर स्वर्ग कैसे बने ?

कल मैंने कहा था कि जम्मू और कश्मीर में २० दिन हुए, यात्रा चल रही है। इतने समय में कुछ देखा और कुछ सुना भी। काफी जानकारी मिली और धीरे-धीरे यहाँ के मसलों का खयाल भी मुझे आ ही रहा है।

विविधता : मसला और ताकत भी

जितना अनुभव हुआ, उससे यही लगा कि जो मसला भारत में है, वही यहाँ भी है। चाहे उसकी शकल-सूरत कुछ अलग दीखती हो, लेकिन मसला वही है। फिर, वह सिर्फ मसला नहीं है। अगर आप अक्ल से काम करें तो वह ताकत भी है।

हिंदुस्तान में अनेक धर्म, जाति और पंथों के लोग इकट्ठा हुए हैं। हमारे यहाँ के एक महाकवि रवि ठाकुर ने कहा था कि भारत मानवों का एक समुन्दर है। बहुत करीम जमाने से मनुष्य-जाति इस देश में आकर बस रही है। इस देश का इतिहास बहुत पुराना है और वह यही दिखाता है कि मुख्तलिफ कौमें यहाँ आयीं और यहाँ की ताकतों से उनकी ताकत टकरायी। इस तरह अनेक ताकतों से टक्कर और कशमकश चली। लेकिन आखिर में वे यहाँ के समाज में मिल गये। इस समाज के अवयव, जुज्ब बन गये और एक मिली-जुली सभ्यता यहाँ बनी। यह हमारे देश की एक ताकत है, लेकिन अक्ल से हम काम न लें तो वही मसला हो जाती है। अनेक धर्म और अनेक जातियों का होना मसला भी हो सकता है और ताकत भी।

लोकतंत्र में देश के अनुरूप परिवर्तन जरूरी

यूरोप से हमने प्रजातंत्र का नमूना लिया और वह ज्यादातर इंग्लैंड का ही नमूना है। किन्तु यहाँ की और इंग्लैंड की परिस्थिति में कितना अंतर है, इसे देखिये। यहाँ हमारे देश में तरह-तरह की १४ राष्ट्रीय जबानें हैं। इनके अलावा जिन्हें 'बोलियाँ' कहते हैं, ऐसी भी कुछ हैं। किन्तु उधर यूरोप में एक-एक भाषा का एक-एक राष्ट्र है। यहाँ हिंदू, इस्लाम, बुद्ध, पारसी, यहूदी जैसे अनेक धर्म हैं। लेकिन इंग्लैंड में एक ही धर्म है और वह है ईसाई धर्म। यहाँ अनेक जातियाँ हैं। लेकिन इंग्लैंड में जाति-भेद नहीं है, इसलिए यहाँ की और वहाँ की हालत में बहुत फर्क है। इंग्लैंड ने २००-३०० साल बहुत पराक्रम किया और जगह-जगह से वहाँ संपत्ति का झरना बहने लगा। उन्होंने बड़ी-बड़ी इंडस्ट्रीज बनायी, देश को मालामाल बनाया। इस तरह इंग्लैंड की तुलना में तो हिंदुस्तान बहुत ही गरीब देश है। यहाँ अनेक धर्म हैं तो वहाँ एक ही धर्म है। फिर भी वहाँ का लोकशाही का तरीका हमने ठीक वैसा ही उठा लिया। यह सच है कि शासन-पद्धतियों में सबसे बढ़कर तरीका लोकशाही का है, फिर भी हरएक की अपनी-अपनी अलग हालत होती है। उसे देखकर उसमें कुछ-न-कुछ फर्क करना चाहिए। वैसा न करें और जैसा का तैसा नमूना ही उठा लें तो लोकशाही की मुश्किलें, तकलीफें, दुश्वारियाँ सामने आ जाती हैं, फैसले जल्दी नहीं होते और काम में देरी होती है। इस तरह के कई सवाल खड़े हो जाते हैं और उसमें काफी वक्त जाता है। आधुनिक विज्ञान के जमाने में व्यर्थ गँवाने के लिए इतना वक्त नहीं होता। इसलिए अपने देश की परिस्थिति देखकर बदल करना और लोकशाही को अपने अनुकूल बनाना होगा।

संवादिता की आवश्यकता

मैं मानता हूँ कि हम इसमें बदल करेंगे, तब्दील करेंगे, लेकिन इसमें कुछ समय जायगा। इसमें कुछ अनुभव मिलेंगे तो कुछ तकलीफ भी होगी। हमारे देश में एक खूबी है, लेकिन वही खामी हो जाती है, अगर हम अक्ल से काम न करें। संगीत के सात स्वर होते हैं। सातों मिलकर बड़ा सुंदर संगीत बनता है। लेकिन ये एक-दूसरे के खिलाफ जायें, राग के अनुकूल न हों तो विसंवाद होगा, गाने का लुत्फ-मजा नहीं रहेगा। 'सा सा सा' जैसा एक ही स्वर रहेगा तो भी संगीत बनेगा। अतः अनेक स्वर होने चाहिए और उनमें संवाद भी होना चाहिए। संवाद गाने की कला होनी चाहिए। तभी मीठा संगीत निर्माण होता है। संगीत में इस प्रकार की जो कला होती है, वैसी ही कला हिन्दुस्तान में भी होनी चाहिए। हिन्दुस्तान में अनेक धर्म हैं, अनेक पंथ हैं। उनका ठीक उपयोग करने का फन और सिफत होनी चाहिए। तभी वह खूबी कायम रहेगी। यहाँ लद्दाख में बौद्ध हैं। जम्मू में हिन्दू और सिख हैं, कश्मीर में मुसलमान हैं, ऐसे चार धर्म यहाँ हैं। इसके अलावा कुछ ईसाई भी होंगे, ऐसी मुख्तलिफ जमातें यहाँ हैं तो हमें उनका ठीक उपयोग करना चाहिए। वे यह न समझें कि यह मुख्तलिफ जमातें हमारे मार्ग में रोड़े डालेंगी। ये रोड़े नहीं, सीढ़ियाँ हैं।

विश्व को बुद्ध-उपदेश का आकर्षण

लद्दाख में पुराने जमाने के बौद्ध हैं। हमारे यहाँ बम्बई-राज्य में, खास कर महाराष्ट्र में हजारों हरिजनों ने बौद्धधर्म स्वीकार किया। एक जमाना था, जब इसी तरह हजारों लोगों ने बौद्धधर्म स्वीकार किया है। यह हमारे देश का गौरव है, इज्जत है कि हमारे यहाँ बुद्धधर्म चला और यहाँ से हिन्दएशिया, लंका, बर्मा, चीन, जापान, मध्यएशिया आदि स्थानों में प्रचारक पहुँचे और दुनिया को यहाँ से प्रकाश दिया गया। यहाँ तक कि बाइबिल में भी जिक्र आता है कि ईसा मसीह के जन्म पर पूर्व से ज्ञानी आये थे—"वाइज मेन आफ दि ईस्ट"—और कहा जाता है कि ये बौद्ध थे। इस तरह यहाँ से जो लोग बाहर गये, वे अपने साथ तराजू या तलवार लेकर नहीं गये। दूसरी जमातें तलवार और तराजू लेकर गयीं। तलवार और तराजू के बाद फिर तख्त आता ही है। इन्होंने वहाँ के लोगों के साथ प्रेम-परिचय प्राप्त किया और इससे वहाँवाले बहुत प्रभावित हुए। हमारे देश की यह बहुत बड़ी बात है। यहाँ के राजाओं के पास बहुत बड़ी-बड़ी सल्तनतें थीं, लेकिन उन्होंने कभी किसी पर हमला नहीं किया। बौद्ध-धर्म हमला करनेवाला नहीं हुआ। इसलिए हम उसका बड़ा उपकार मानते हैं। भगवान बुद्ध की जो इज्जत ब्रह्मदेश और तिब्बत में है, वह हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। इस पर हमें नाज हो सकता है और है भी। हमने बुद्ध को भगाया नहीं। उसे अवतार मान लिया और उसका सारा का सारा उपदेश जज्ब कर लिया। यहाँ के हिन्दूधर्म, वैदिक धर्म में वह समा गया, जैसे समुद्र में नदी समा जाती है। यही हमारे देश की खूबी है।

अब तो नये सिरे से बुद्ध की सीख की ओर लोगों का ध्यान जा रहा है और बुद्ध की सीख ही ऐसी है, जो आज

के जमाने में पूरी लागू हो सकती है, जब तंगनजरिया बन रहा है, बड़े-बड़े शस्त्रास्त्र बन रहे हैं और इन्सान को इन्सान से ही बहुत डर मालूम हो रहा है। ऐसी स्थिति में अगर उनकी सीख को हम अपनायें तो डर न रहेगा। बुद्धधर्म कहता है कि हम सबको प्यार से जीतेंगे। हमें सबके साथ प्यार से रहना चाहिए और सीधी राह चलना चाहिए। इस प्रकार बुद्धधर्म सबको अपनी ओर खींचता है, मुझे भी खींचता है।

धर्म-परिवर्तन व्यर्थ की चीज

फिर भी मैं हिंदू मिटकर बुद्ध बनने की जरूरत महसूस नहीं करता। दूध के नाम से मैं शक्कर भी पीता हूँ। दूध में शक्कर डालता हूँ और लोग पूछते हैं तो 'दूध पिया' ऐसा ही कहता हूँ, 'दूध और शक्कर पीया' ऐसा नहीं कहता। शक्कर उसके नीचे चुपचाप अपनी मिठास देगी। इस तरह मेरे हिंदूधर्म में बौद्ध-धर्म मिठास पैदा करता है। मैंने बौद्धों से पूछा था कि क्या आप मुझे दीक्षा देंगे तो उन्होंने कहा कि आपको दीक्षा देने की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि बुद्धधर्म का प्रभाव मेरे दिल पर पूर्ण रूप से है ही। एक जगह बौद्धधर्मी लोग मिले, उन्होंने कहा कि बाबा गौतम बुद्ध के नक्शेकदम पर, चरण-चिह्न पर चल रहा है। मैंने इसमें गौरव माना। बिहार में मैं गया तो वहाँ का कुल काम मैंने भगवान बुद्ध के नाम से किया। बोधगया में जिस पेड़ के नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान मिला, उसके नजदीक ही मुझे जमीन दान में मिली तो वहाँ समन्वय-आश्रम शुरू किया। मैंने 'धम्मपद' का नया संस्करण निकाला है, जिसमें भगवान बुद्ध के सब वचनों की नये सिरे से रचना की है। लेकिन हिन्दू मिटकर मैं बुद्ध बनूँ और बौद्ध लोगों को हिन्दू बनाऊँ, हिन्दुओं को बौद्ध बनाऊँ, इस तरह का रूपान्तर करने की जरूरत मुझे महसूस नहीं होती। दोनों-तीनों चीजें मिलकर एक भी हो सकती हैं। भोजन में खारापन, मीठापन, तीखापन सब तरह के रस होने चाहिए। हिन्दू, बौद्ध, सिख और इस्लाम आदि अनेक धर्मों में भी अलग-अलग रस हैं।

सभी धर्मों के उपदेशों का सार एक

सभी धर्मों की सीख का सार हमें समझना चाहिए। वह एक ही है। गुरु नानक ने कहा है कि अठारह हजार बातें हैं, लेकिन असल धातु, बुनियादी चीज है "सकल जमाती"। जितने भी अलग-अलग धर्म हैं, वे सब इबादत के अलग-अलग प्रकार हैं। इबादत के अनन्त तरीके हो सकते हैं। लेकिन अनन्त तरीकों में चीज एक ही है। अनुभव एक ही आता है। सबके अनुभव इकट्ठा कर सकते हैं। यही बात कुरान में कही है। उसमें कहा है कि हर जमात अपने-अपने पंथ पर चलती है, डटी रहती है, फक्र करती है। एक-दूसरे को नीचा-ऊँचा समझती है। लेकिन आप सब लोग एक ही जमात हैं। जितने नबी, गुरु, पैगम्बर आदि महान लोग हो गये, उन सबके रसूलों में हम फर्क नहीं करते। "उम्मतुम वाहिद्" इस रसूल में कोई फर्क नहीं किया जा सकता। भगवान मुहम्मद को कह रहे हैं कि कुछ रसूल ऐसे हैं, जिनके नाम तुम जानते हो। लेकिन ऐसे बहुत से रसूल हैं, जिनके नाम तुम्हें मालूम नहीं। "ला नु फर्रि कु, बैन अह-दिम्, मिर रुसुलिह्।" हम किन्हीं रसूलों में फर्क नहीं करते।

भारत की खूबी : सभी खूबियों का एकत्रीकरण

तात्पर्य यह कि सब खूबियों को इकट्ठा करना भारत की खूबी है। सबकी अलग-अलग खूबी होती है। जैसे इस्लाम में एकता का खयाल है, समानता की भावना है, ऊँच-नीचता का स्थान नहीं है। नमाज पढ़ने के लिए बादशाह भी देरी से आयेगा तो पीछे जहाँ जगह होगी, उस स्थान पर बैठ जायगा। मजदूर और बादशाह में कोई फर्क नहीं है। सब समान हैं और सारे इबादत में मगन हो जाते हैं। यह लेने लायक बात हमें लेनी चाहिए। ऐसी ही खूबियाँ प्रायः हर धर्म में होती हैं।

ईसाइयों की ही बात देखिये! दुनिया में जहाँ कहीं कोई बीमार होते हैं, उनकी खिदमत में, सेवा में, ईसाई पहुँचते हैं। कुष्ठ-रोगियों की सेवा भी वे करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि प्रभु ईसा का संदेश पहुँचाने के लिए वे सेवा करते हैं। पर मैं कहता हूँ "ताहम", यह शर्म की बात है कि हमारे देश में बीमारों की सेवा हम न करें और वे आकर करते हैं। ईसाई लोग अपने जीवन और कर्म से एक बहुत बड़ी नसीहत देते हैं। हिन्दू-धर्म में वेदान्त और ब्रह्मविद्या है, जो लेने लायक है। बौद्ध-धर्म में करुणा है, बुद्धि पर जोर दिया गया है, उसे हमें लेना चाहिए। इस्लाम में जातिभेद मिटाने की बात है, वह हमें लेनी चाहिए। सिखों ने वीरता और पराक्रम के साथ भक्ति को जोड़ दिया है, उनके यहाँ जो बड़े-बड़े योद्धा थे, वे ही उत्तम ज्ञानी हो गये, यह बात हमें लेने लायक है। इस तरह हर धर्म में जो लेने लायक है, उसे हमें ले लेना चाहिए।

कश्मीर में मसला है ही नहीं

मैंने कभी कहा था कि 'हम तो समझते हैं कि कश्मीर में मसला है ही नहीं।' जब यह अखबारों में छपा तो कुछ लोग हैरान हो गये और कहने लगे कि यह आपने कैसे कहा? मैंने उनसे कहा कि मृगजल वहीं होता है, जहाँ धूप की किरणें पड़तीं हैं। लेकिन जहाँ रात होती है, वहाँ मृगजल नहीं होता, मृगजल एक खयालमात्र ही है। इसी तरह वे मसले भी खयाली हैं। अगर हम ठीक ढंग से पेश आते हैं तो मसले काफूर हो जाते हैं। मसले हमने बनाये हैं, वे परमेश्वर के बनाये नहीं हैं। अब यह बात ठीक है कि बिहार में बाढ़ आती है तो कुदरत एक मसला खड़ा करती है। आज भी चीन में तीन-तीन हजार मील बहनेवाली नदियाँ अपनी जगह बदलती रहती हैं, हिंदुस्तान में ऐसा नहीं है। जगह-जगह बाढ़ आती है और नदियाँ अपनी जगह बदलती हैं तो यह एक कुदरती मसला है। इसमें विज्ञान की मदद ली जाय तो मसला कुछ हल होगा तो कुछ हद तक हल नहीं भी होगा। किन्तु अगर हम प्रेम से रहना सीखें तो अगर सभी खयाली मसले हैं तो जरूर हल होकर रहेंगे।

मैं तो कहता हूँ कि हमारे देश में मसला है ही नहीं। दस हजार साल से यहाँ अनेक जमातें आ बसी हैं और यहाँ मिली-जुली सभ्यता चल रही है। हम प्रेम से रहना जानते हैं। हमारी सभ्यता में ही यह चीज पड़ी है। फिर भी कभी कहीं कुछ हो जाता है और अखबारों में बड़े-बड़े टाइपों में वह छपता है तो कुछ हैरानी हो जाती है। पर बाद में हम इसे भूल जाते हैं। दस हजार साल का इतिहास यही बताता है कि हिन्दुस्तान की यह खूबी है कि यहाँ के लोगों के चित्त पर बुराइयाँ ज्यादा देर तक नहीं टिकतीं। अभी मैं पंजाब हो आया हूँ। हजारों साल से पंजाब पर हमले होते आये हैं। अभी-अभी हिंदुस्तान और पाकिस्तान की तकसीम हुई, तब भी देश के सभी सूबों से कई गुना अधिक मुसीबतें पंजाब को सहनी पड़ी हैं। फिर भी वहाँ मैंने "ना कोई बैरी नाहीं बेगाना" यह गाना बीसों दफा सुना। मेरी मीटिंगों में इतना मीठा गाना वे गाते थे, जिसका मतलब यह है कि हमें कोई बैरी नहीं। जब से साधु-संगति मिली, तब से हम यह सब भूल गये, बिसर

गये। इस तरह स्पष्ट है कि पंजाब की संस्कृति हजारों साल से चली आयी है। हजारों साल से पंजाब पर आफतें आती और जाती रही हैं और पंजाबवाले उन्हें भूलते भी जाते हैं। वे भलाई को नहीं भूलते, बुराई को ही भूलते हैं। यही खूबी है, यही इंसानियत है, जो वहाँ पनपी है। कोई बुरी चीज थोड़ी देर के लिए हावी होती है और दूसरे क्षण में खत्म हो जाती है।

प्रेम से रहना सीखें

इसलिए यहाँ पर जो मसले हैं, वे तो ख़यालो हैं। दूसरे प्रान्त में भी मसले नहीं हैं, ऐसी बात नहीं। पर ऐसा कोई मसला नहीं, जो हमारी अक्ल से परे हो। हमें सिर्फ एक बड़ी बात करनी है और वह यह कि हम प्रेम से रहना सीखें। यह कोई नयी बात नहीं है। अभी गांधीजी हमें यही सिखाकर गये हैं। भारत में तो सत्पुरुषों की बारिश हुई है। बड़े-बड़े सत्पुरुष यहाँ आये-गये और जगाते चले गये। उन्होंने हमें सिखाया कि प्रेम से रहो। अतः यह ध्यान में रखने की बात है कि हमें प्रेम से रहना है। यह मुसलमान है, यह हिन्दू है, ये सारे इबादत के भिन्न-भिन्न प्रकार हैं। चीज तो एक ही है।

शान्तिप्रिय तटस्थों से सलाह ली जाय

आप लोगों ने रामकृष्ण परमहंस का नाम सुना होगा। उन्होंने बहुत किताबें नहीं पढ़ीं, कोई खास अध्ययन भी नहीं किया। फिर भी उन्होंने सब धर्मों का अध्ययन किया। कुछ हिन्दू, वेदांत, इस्लाम, ईसाई और सूफियों के तरीकों का अध्ययन किया। फलतः वे इसी नतीजे पर आये कि असल धातु एक ही है। यह नतीजा उन्होंने भारत के सामने रखा। लेकिन बात क्या होती है? कुछ एम्बीशस लोग होते हैं और वे एम्बीशन के कारण हाथ में सत्ता ले लेते हैं, बावजूद जम्हूरियत के फिरचंद लोगों के हाथ में देश की बागडोर आ जाती है। आप मुझे माफ करेंगे, ये लोग औसत अक्लवाले होते हैं। औसत अक्ल याने डेयरी का दूध। डेयरी का दूध किसी एक उत्तम गाय के दूध की बराबरी नहीं करता। वह उतना उत्तम नहीं होता है और न बिलकुल खराब ही होता है। फिर उसमें अनेक गायों के दूधों का मिश्रण होता है। इसी तरह जम्हूरियत में कोई प्रधान मंत्री बनता है तो कोई मुख्य मंत्री। फिर भी कोई औसत से ऊपर की अक्लवाला नहीं होता। ऐसे ही लोगों के हाथ में देश की बागडोर देने पर खतरा होता है। ऊँचे आदमी के पास हम नहीं पहुँचते और वे भी इसमें नहीं आते। हमारे देश में राजाराम हो गये। लोग तो उनको भगवान मानने लगे। लेकिन वे भी वसिष्ठ के पास जाकर सलाह लेते थे। इसलिए ऐसे भी लोग रहने चाहिए, जो हाथ में शासन की बागडोर नहीं लेते हों, गैरजानिबदार हों और शांतिपूर्वक तटस्थ भाव से सोचते हों ऐसे लोगों के पास जाकर हमें इस जम्हूरियत में उनकी सलाह लेनी चाहिए।

मैं कहना यह चाहता हूँ कि कोई मसला नहीं, अगर हम प्रेम से रहें। यहाँ हिंदू, सिख, मुसलमान, और बौद्ध, ये चार धर्म हैं। हर एक की अपनी-अपनी खूबी है, लेकिन रंग एक ही है। उनका ठीक उपयोग हो तो हम देखेंगे कि कोई मसला है ही नहीं। हरएक खूबी का उपयोग, लाभ मिल सकता है। ये सारे अच्छे रंग हैं, इन्हीं में से अच्छी बात निकल सकती है।

जाति-भेद मिटा दें

भारत में जातिभेद, छूआछूत बहुत ज्यादा है। यहाँ कुछ कम है, राजस्थान में ज्यादा है, वैसे वह चीज मरने को थी और मर भी चुकी थी, लेकिन उसे जिलानेवाली जड़ी-बूटी हमारे हाथ में आ गयी। वह जड़ी-बूटी थी लोकशाही का तरीका, जिसे हमने इंग्लैंड से जैसा का तैसा ही ले लिया। पार्सल खोला नहीं, देखा नहीं और ऐसा ही खाने लग गये और कहने लगे कि मिठाई मीठी लगती है! फिर उससे हैजा हो जाय तो उसका कोई विचार ही नहीं। इसीसे जातिभेद को बल मिला, नहीं तो राजा राममोहन राय से गांधीजी तक उस पर प्रहार कर चुके थे और वह मरने को ही था। इलेक्शन के तरीके से ही उसमें प्राण आ गया। तरह-तरह के लोग जाति की तरफ से खड़े किये जाते हैं। जहाँ-तहाँ वही बात चलती है। दस साल पहले जितना जातिभेद था, आज वह उससे अधिक हो गया है। उसमें कोई जान नहीं, पर बिना जान के ही वह जिन्दा हो गया है। उसे हमें सुधारना चाहिए और हम सुधार सकेंगे, अगर हम यह भेद मिटाकर प्रेम से बरतें तो निश्चय ही उसे हम मिटा सकते हैं। हम अगर यहाँ ऐसा करें तो बड़ा आनन्द आयेगा और कश्मीर एक सुन्दर स्वर्ग बन जायगा। इस स्वर्ग में सुविधा भी है। कश्मीर में ठंडक हुई तो जम्मू में आने की सुविधा है। मैंने स्वर्ग के वर्णन बहुत पढ़े हैं। वहाँ कुछ लोग हमेशा पालकी में बैठते हैं। वहाँ कुछ लोग पालकी में बैठते हैं तो कुछ लोगों को कन्धे पर पालकी उठानी भी पड़ती है। ऐसा निकम्मा स्वर्ग हमें नहीं चाहिए। यहाँ गर्मी हुई तो हम कश्मीर में जा सकते हैं। दोनों प्रकार की आबोहवा का लाभ मिल सकता है, यह अच्छी बात है। कुदरत ने हमें बहुत नियामतें दी हैं, इसमें विज्ञान से भी मदद मिल सकती है। लेकिन विज्ञान की एक शर्त है। उस शर्त के साथ उसका उपयोग हमें करना होगा, तभी लाभ होगा। विज्ञान कहता है कि तुम लोग एक बनोगे तो लाभ होगा, नहीं तो खात्मा होगा। हमें विज्ञान से लाभ लेना चाहिए और हम उसे ले सकते हैं। उसके लिए हमें प्रेम से मिल-जुलकर रहना चाहिए। ◆◆◆

अनुक्रम

१. तीन आवश्यक कर्तव्य :....

ऊधमपुर २ जून '५९ पृष्ठ ५१३

२. कश्मीर सुन्दर स्वर्ग कैसे बने ?

जम्मू १० जून '५९" ५१४

जय ग्रामदान-जय जगत

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी